समिती के संमेलन पावन प्रेरणा प्रवाह

राष्ट्र सेविका समिती का पंद्रहवा अखिल भारतीय संमेलन शीघ्र ही संपन्न होनेवाला है।प्रथम तीन वर्षों के अंतराल से संमेलन होते थे। १९८६ से १० वर्षोंके अंतराल से संमेलन संपन्न करने का निर्णय लिया गया। हर संमेलन में बहनोंकी ऐसी उत्सुकता होती रही है कि मानो अपने मातृगृह में अपने परिवारजनोंकी भेट होनेवाली है, निरपेक्ष आनंद का अनुभव होनेवाला है या किसी पवित्र तीर्थस्थान की मंगलयात्रा का समाधान प्राप्त होनेवाला है। इस वर्ष के संमेलन में चार चाँद लगेंगे क्यों कि यह वं मौसीजी जन्माताब्दी के उपलक्ष्य में संपन्न होनेवाला है। पूर्व संमेलनोंकी एक झलक देखकर पुनरानंद की अनुभूती ल सकेंगे इस लिये यह छोटासा संकलन।

सम्यक मीलन- संमेलन

वं. मौसीजी कार्यविस्तार हेतु भारतवर्ष में प्रवास करती थी। इस प्रवास में उन्हें अनुभूति हुईकी हमारे देशव्यापी कार्य की जानकारी सभी प्रांतों की सेविकाओं तक पहुंचाना चाहिये। स्थान स्थान की सेविकाओंका आपसी परिचय, सान्निध्य, कार्यविस्तार हेतु प्रेरणादायी होगा। वं मौसीजी के मन:पटल पर अंकित थाकुंभमेला,पंढरपुर की वारी और धर्मयात्राएँ, जहाँ सुविधा असुविधाओंकी पर्वा न करते हुए भक्तगण अतीव श्रद्धा से भगवान के दर्शन से प्रसन्न होते है। यह सब ध्यान में लेते हुए अकिल भारतीय स्तर पर संमेलन के आयोजन का निर्णय हुआ। सन १९४५ में इस विचार ने प्रत्यक्ष रूप धारण किया।

प्रथम संमेलन

सन १९४५ में महानगरी मुंबई में प्रथम संमेलन का आयोजन किया गया था। देश के वातावरण में स्वतंत्रता धुन संवार हुई थी। सभी कार्ययुक्त प्रांतो से ४५० सेविकाएँ उपस्थित थी। वातावरण प्रफुल्लित था। मन भी उत्सुक था। विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करनेवाली सेविकाओं का परिचय एवं सहजीवन का प्रथम प्रयोग बडा ही उपयुक्त रहा। समितिकार्यविस्तार हेतु व्यापकसामाजिक संपर्क होना आवश्यक है यह विचार चर्चा में सामने आया। बदलती सामाजिक राजनीतिक परिस्थिती में व्यापक संपर्क का माध्यम शिशुमंदिर, उद्योग मंदिर हो सकता है इस विचार से नये आयाम जोहने का निर्णय हुआ। संमेलनस्थानपर मा. काकू रानडे द्वारा तैयार की गयी आकर्षक वस्तुएँ- जो निरूपयोगी फकनेलायक चीजोंसे बनायी थी-प्रदर्शनी में रखी थी। वं. मौसीजी का पूर्णकालीन सान्निध्य इस संमेलन में सेविकाओंके लिये प्रेरणादायी रहा।

स्वतंत्रता के बाद दुसरा संमेलन

उसके पश्चात यह तय हुआ कि, इस संमेलन के आयोजन से सेविकाओंकी आपस में पहचान, कार्यप्रेरणा के नये स्त्रोत की जानकारी कार्यविस्तार के लिये लाभदायी रहती है। संमेलन का हेतु सफल होने के लिये अधिक चिंतनपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। निश्चित अंतराल से संमेलन होना चाहिये यह भी तय हुआ।

इस पृष्ठभूमि पर दुसरा संमेलन सन १९४७ के डिसेंबर में मिरज (महाराष्ट्र) में हुआ। अन्यान्य प्रांतोंसें १२०० सेविकाएँ उपस्थित ती। स्वतंत्रता प्राप्ति का आनन्द था परंतु अपने अनेक परिवारोंकी वाताहत से मन दु:खी था। हमेशा ऐसा ही होता है-एक आंक हसती है तो दुसरी रोती है।

संमेलन में हमें प्रतिकूल परिस्थितीयों पर मात करनी ही है यह विचार दृढ हुआ। उस समय पानी एवं चीनी की कमी थी। फिर भी शृंकला पद्धति से पानी की कमी तथा प्रत्येक सेविका ने एक कटोरी चीनी घर घर से लाकर वह कमी दूर की। मौसीजी ने अपने बौद्धिक में यह विचार प्रस्तुत किया कि दृढ ध्येयनिष्ठा, आत्मीयता,स्नेहभाव से कठिनाइयों को पार करने में हमें यशस्वी होते है।

जीवनरथ सारथी स्त्री

१९४७ में देश का विभाजन, अनेक हंदू परिवारों की दुर्दशा, राजनीतिक सूझबूझ की अनभिज्ञता, महात्मा गांधीजी की हत्या, संघ पर प्रतिबंध आदि का कार्यविस्तार परअसर हुआ। परंतु शाखाओंका पुर्नगठन प्रयत्नपूर्वक किया गया। संगठित प्रयत्नोंसे हम इस संकट का सामना कर सके। फिर भी पूर्व स्थिति आने के लिये ५/६ साल चले गये। वातावरण स्थिर होते ही १९५३ में मुंबई में ङ्गर्सजीवन विकास परिषदङ्ख के नाम से संमेलन आयाजन किया गया। पुरूषों जैसे शारीरिक व्यायाम से सकिति की सेविकाओंके वैवाहिक जीवन पर विपरीत परिणाम तो नही होंगे यह विचार वं. मौसीजी के मन में बार बार आ रहा था। दुसरा

महत्वपूर्ण विषय था स्त्रीशिक्षा का। महर्षि कर्वे जैसे लोगोंके विविध प्रयोग चल रहे थे। बदलती परिस्थिति में प्रस्तुत सभी विषयोंकी पढाई करते हुए भी स्त्री का मातृत्वभाव तथा सुगठित परिवार की भावना कायम रहें, यह परम आवश्यक था। इन बिंदुओंपर विचारविमर्श करना यह इस संमेलन का प्रमुख उद्देश्य था।यह संमेलन अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण चरण रहा। डॉ. कमलाबाई देशपांडे महर्षि कर्वे, डॉ. पुरंदरे, महामहोपाध्याय बाळशास्त्री हरदास जैसे महानुभावोंका मार्गदर्शन मिला। मुंबई के महामहिम राज्यपाल श्री हरेकृष्ण मेहताब विशेष रूप से उपस्थित रहेऔर उन्होंने इस प्रयोग की प्रशंसा की।

इस संमेलन की विशेषता यह थी कि समिति कर शारीरिक शिक्षा पद्धति में संशोधन किया गया। योगासन का विशेष आयाम जुडा। कुछ विधियोंमें परिवर्तन किया गया। गृहिणी विद्यालय की योजना बनायी गयी जिसका दायित्व मा. बकुळताई देवकुळे और मा. लीलाताई वाकणकर को दिया गया। इस हेतु प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इसी के साथ साथ कुछ प्रमुख विषयों पर विचारमंथन हुआ-जैसे -धर्मपरिवर्तन रोकने हेतु कानून बनाने की माँग, शालेय पाठ्यक्रम में धार्मिक विषयोंका समावेश, चिकित्सालय, औषधालय आदि सुविधाओंका निर्माण,महिाओंका मानभंग, स्त्रीशिक्षा में मुलभूत बदल ऐसे अनेक महत्वपूर्ण विषयोंपर विचारमंथन हुआ। समिति के आराध्य दैवत के रूप में देवी अष्टभुजा की कल्पना आकार ले रही थी।

सेविका वार्षिक का शुभारंभ

इस संमेलन का और एक महत्वपूर्ण निर्णय था सेविका प्रकाशन का निर्काण और राष्ट्र सेविका अंक का प्रकाशन। श्रेष्ठ संस्कारक्षम साहत्यि अपने बहनों द्वारा निर्माण करने की प्रेरणा देने हेतु इसकी परम आवश्यकता थी। तबसे इस वार्षिषांक का प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। विविध विषयों पर विविध भाषाओं में साहित्य भी प्रकाशित हो रहा है।

समापन कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण विचार वं मौसीजी ने प्रस्तुत किया-'जीवनरथ को सारथी स्त्री एवं पुरूष रथी है। 'अभी तक स्त्री और पुरूष जीवनरथ के दो पहिये है ऐसा कहा जाता था। वं. मौसीजी ने सोचा किचक्र गति का प्रतीक हैपरंतु उसको किसीने गतिमान करने की आवश्यकता होती है। रथ को गति देनेवाला सारथी होताहै। वह काम स्त्री का है- होना चाहिये। अत: यह विचार रखा गया। सभी समाचार पत्रोंने उसकी दखल ली। अनेक व्यंगचित्र प्रकाशित हुए। समिती कार्य को विशिष्ट दिशा मिल रही थी।

रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की शतवार्षिकी

सन १९५८ में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान दिवस की शत संवत्सरी के उपलक्ष्य में नेतृत्व गुण का समिति का आदर्श रानी लक्ष्मीबाई का स्मारक नाशिक में बनाने की योजना बनी। २३ से २६ मई १९५८ को संमेलन संपन्न हुआ। 'रानीभवन ' इस वास्तु का उद्घाटन 'सेविका 'वार्षिक के विशेषांक का विमोचन, रानी की प्रतिमा की भव्य शोभायात्रा, वेदमूर्ति पं. सातवळेकरजी , प्रांत के स्वास्थ्यमंत्री श्री. कन्नमवार जी का मार्गदर्शन ऐसी अनेक विशेषताओंसे यह संमेलन परिपूर्ण रहा। समितिकार्य का अनुशाासनबद्ध और और भव्य दर्शनप्रभाी था। संमेलन के माध्यम से इस विस्तार की स्पष्ट कल्पना सेविकाओंको मिल रही थी। स्वातंत्रता युद्धपर प्रदर्शनी लगायी थी। खड्गधारिणी का अर्धपुतला स्थापित किया गया। 'खड्गधारिणी तुम्हे देत मानवंदना ' यह गीत इसी संमेलन की देन है। समिति के प्रथम सार्वजनिक न्यास एवं वास्तु का निर्माण यह विशेष बिंदू रहा।

रजत जयंतीवर्ष- वर्धा संमेलन

समितिकार्य के २५ वर्ष पूर्णहो रहे थे। समिति का जन्म स्थल वर्धा है इसी कारण सन १९६१ का संमेलन वर्धा में १३,१४,१५ नवंबर को संपन्न हुआ। गत संमलनोंमें देवी अष्टभुजा की कल्पना रखी गयी थी। इसी मा मूर्त रूप इस संमेलन में सेविकाओं के सामने प्रस्तुत किया गया। रजत जयंती वर्ष में संपन्न होनेवाले संपन्न से पूर्व निर्णय लिया गया कि हर शाखा ने नवरात्रि में अपने स्थान पर दीप में डालना है। केंद्र का दीप हर शाखा ने लाये हुये तेल से प्रज्वलति हुआ। दिनांक १३ की रात को ही अचानक वं. भौसीजी की ज्येष्ठ भगिनीतुल्य सहयोगिनी उनकी जेठानी उमाकाकू का निधन हुआ। दिनांक १४ को अंत्यसंस्कार हुआ। सायंकाल वं. मौसीजी संमेलन स्थान पर आयी। रात को घर लौटी। व्यक्तीनिष्ठा नही तत्वनिठा ही महत्वपूर्ण है यह विचार वं.मौसीजीने अपनी कृति से सेविकाओंके सामने रखा। दिनांक १५ को समापन कार्यक्रम में भी वं. मौसीजी पूर्ण समय उपस्थित रही। समितिकार्य सर्वोपरि इस विचार का दर्शन उस समय सभी सेविकाओंको हुआ।

अष्टभुजा देवी का दर्शन यह अनोखा प्रयोग संमेलन में हुआ। वह सर्वत्र लोकप्रिय हुआ। बंद मडदे के सामने देवी की आरती हो रही है। 'हे देवि, प्रकट होकर हमें आशीर्वाद दो। इस पंक्ती के बाद घंटा, घडियाल शंख के गजर में अष्टभुजा प्रकट होती है। एक के पीछे एक चार युवतियाँ ऐसी खडी थी कि केवल उनके हाथ दिखाई दे रहे थे। मानो एक ही देह से सटे है।यह अष्टभुजा दर्शन तालियोंके कडकडाट और भारतमाता की जयजयकार ध्वनी से गुंज उठा। सजीव कठपुतलियाँ द्वारा बंपूर्ण दिनचर्या दिखायी गयी यह दूसरा अनोखा प्रयोग था।

अनुशासनबद्ध पथसंचलन, शोभायात्रा, अष्टभुजादर्शन, समयोचित विषयोंपर परिसंवाद, चर्चा, 'सेविका 'के विशेषांक का विमोचन, आकर्षक व्यायामप्रदर्शन हुआ। वं. मौसीजी ने समापन के बौद्धिक में कहाँ, कि अपनी आराध्य देवता देवी अष्टभुजा शक्ति, बुद्धि, समृद्धियुक्त विशाल हिंदु मातृत्व का प्रतीक है। उसकी पूजा उन गुणोंकी पूजा है। किसी मुर्ति की नहीं। उससे बल प्राप्त कर हमें दैनंदिन शाखा विस्तार पर बल देना है। समापन समारोह की अध्यक्षा सुप्रसिद्ध साहित्यिक मालतीबाई बेडेकर ने कहाँ,'विज्ञान और अध्यात्म में सामंजस्य निर्माण करने का दायित्व समिति को निभाना है। यह देवालय की पवित्रता, त्याग से अलोकित एवं भोग से कलंकित होती है। स्त्री ने इस बात को मन में रखते हुए सभी को वैसी प्रेरणा देनी है।' प. पू. गुरूजी का बौद्धिक एवं मा. अप्पाजी जोशी की उपस्थिति ये विशेष बाते रही। प.पू. श्री गुरूजी ने व्यक्तिधम, कुलधर्म, पडोसीधर्म, तथा राष्ट्रधर्म का विचार विशद किया। राष्ट्र के प्रति एकरूप होकर ही हमें हमारी परंपरा का तिन करना है। हमारा समाज अनेकता में एकता का मूर्तिमंत रूप है। इसे निभाना एवं सुदृढ करना ही हमारा राष्ट्रधर्म है। व्यक्तिगत मोह से ऊपर ऊठकर हबें राष्ट्र निर्माण के कार्य में अधिकाधिक आगे आना है।

वं. मौसीजी की षष्ट्यब्दि- नागपूर संमेलन

सन १९५४ का संमेलन अपने आप में वैशिष्ट्यपूर्ण था। वं. मौसीजी की षष्ट्यब्दि की पार्श्वभूमी इस संमेलन को थी। दिनांक ८,९,१० नवंबर १९६४ को नागपुर में संमेलन का आयोजन किया गया। १,००० सेविकाओंकी उपस्थिति थी। संमेलनपूर्व सर्वेक्षण हेतुएक प्रानावली तैयार की गयी थी। अपने निजी जीवन से संबंधित प्रन्न जैसे धार्मिक संस्कार एवं परिवार में स्त्री-पुरूष संबंध, सामंजस्य, इन विषयोंका प्रन्नावली में अंतर्भाव था। वं. मौसीजी का गौरव एक व्यक्ति का गाअरव नहीं अपितु एक संघटन का गौरव था। अनेक सेविकाओंने विविध संकल्प किये थे। 'हिंदुत्व 'और 'समिति से मैने क्या सीखाँ' इन वियोंपर परिसंवाद हुआ। गदर के क्रांतिकारक देशभक्त तथा कृषिशास्त्रज्ञ मेक्सिको के कृषिसंचालक श्री. खानखोजे द्वारा देवी अहल्याबाई की प्रतिमा का अनावरण, वं. मौसीजी के कुटुंबियोंका परिचय, भव्य पथसंचलन आदि वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यक्रमोंसे संमेलन परिपूर्ण रहा। समापन कार्यक्रम में वं. मौसीजी का खड्ग से मानवंदना दी गयी। सुप्रसिद्ध क्रिकेटपटू श्री देवधरजी की सुविद्य पत्नी इंदिराबाई देवधर की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में प.पू. श्री गुरूजी की विशेष उपस्थिति एवं उनका प्रेरणादायी आशीर्वचन सभी को प्राप्त हुआ। सौ. इंदिराबाई ने कहाँ कि,सुसंस्कार के बिना हुई भौतिक प्रगति भयावह होगी। प.पू. श्री गुरूजी ने कहाँ कि, स्वदेशी और देशभक्ति अपने जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिये।

वं. मौसीजीने अपने उद्बोधन से पूर्व देवी अहल्याबाई होळकर की प्रतिमा को माला चढाई और कहाँ,कि रानी लक्ष्मीबाईका देशहित समर्पित नेतृत्व, देवी अहल्याबाई का प्रजाहितसमर्पित कर्तृत्व तथा जीजामाता का जागृत तेजस्वी मातृत्व हमारा आदर्श है। ये भावनाएँ महिलाओंमें निर्माण हो इसलिए समिति संकल्पित है। वं.मौसीजी को सभी प्रांतो सें संकलित गौरवनिधि समर्पित किया। देवी अहल्य मंदिर नाम से यह कार्यालय प्रतिष्ठित हुआ है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से जीजामाता का मातृत्व , देवी अहल्याबाई का कर्तृत्व तथा लक्ष्मीबाई का नेतृत्व सेविकाओं ने नाट्यरूप में प्रस्तुत किया।

पुण्यनगरी में प्रभाव

राष्ट्र सेविका समिति के कार्य की सरस्वती महाराष्ट्र में पुणेमें प्रकट हुई थी। अत: १९६८ का संमेलन पुणे में करना निश्चित हुआ। वं. ताईजी पे पति का १९६७ में निधन हुआ था। परंतु वं. ताईजी जे व्यक्तिगत आपत्ति को कार्य में बाधा नही डालने दी। कार्यनिष्ठा ये दूसरा प्रमाण सेविकाओंके सामने प्रकट हुआ। वं. ताईजी के ऋजु एवं स्नेहशील, संघटनकुशल स्वभाव ने समितिकार्य को निश्चित आकार दिया। संमेलन के पूर्व बातचित में डॉ. कुसुमताई घाणेकर ने बालिकाओंका उपनयन करने के लिये समाजमन बनाना चाहिष ऐसा समिति सोचती हैऐसा कहाँ। समाचारपत्रों में उसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

इस संमेलन में १३०० सेविकाओंकी उपस्थिती थी। विविधांगी कार्यक्रमों का आयोजन सफलता से किया गया। वं. मौसीजी के 'रामायण प्रवचन'(मराठी) इस पुस्तक का विमोचन श्रीमंत सुमित्राराजे भोसलेद्वारा किया गया। ' विशाल भारत दर्शन' इस पुस्तक का भी विमोचन हुआ। विशाल शोभायात्रा, अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रम यह इस संमेलन की विशेषता थी। वं. मौसीजी ने संमेलन में 'हिंदु महिलाओं का संगठन-महत्व और प्रासंगिकता' के बारे में विचार सेविकाओं के सामने प्रस्तुत किया। मा. श्री रामभाऊ म्हाळगी का यशस्वी सेविका विषय पर बौद्धिक हुआ। अपना समाज तथा परिवार के बारे में समझपूर्वक कर्तव्य निभाना है। निवृत्त होकर निष्क्रिय बनने की अपेक्षा राष्ट्रकार्य के लिये प्रवृत्त होना यही यशस्विता है। विनय,कर्तृत्व, समर्पण, आत्मविश्वास ये सीढियाँ है। वं. मौसीजी ने कहाँ कि स्त्री ने संरक्षण करने की क्षमता प्राप्त करना। दुसंहारकारिणी शक्ति हमें प्राप्त होगी तो सब सहयोग देंगे जैसा श्रीराम को इंद्र से प्राप्त हुआ था। हमें वैसी शक्ति प्राप्त करनी है। सावित्री कालजयी ाक्ति का प्रतीक है, इस कथा का गूढार्थ समझ लेंगे तो आत्मविस्मृत युवापीढी की अस्मिता जागृत करने हेतु काल द्वारा प्रस्तुत आकर्षणों में हमने नही फसना है यह ध्यान में आयेगा।

प. पू. श्री गुरूजी ने विशेष रूप से कहाँ कि माताओंने ही हिंदुत्व का संस्कार जगाना चाहिये। चारित्र्यसंपन्नता एवं भारतमाता के प्रति नितान्त निष्ठा यहीं हिंदुत्व की कसोटी है।

समापन कायक्रम की अध्यक्षा श्रीमंत विजयाराजे शिंदे। विविध शारीरिक व्यायाम, गृहिणीयों द्वारा देशी खेलोंका प्रात्यक्षिक तथा प्रथम बार घाटी लेझीम का प्रात्यक्षिक हुआ। पुराने लोकगीतोंको नया रूप देकर प्रस्तुत किया गया। राजमाताजी बहुत प्रभावित हुई। समितिकार्य और वं. मौसीजी के प्रति उनके मन में नितान्त निष्ठा निर्माण हुई। एक अनोखा आत्मीय स्नेहसंबंध निर्माण हुआ। बाद में अनेक बार अपने मन की वेदना वे वं. मौसीजी को बताती थी। मै अपनी बॅटरी चार्ज करने हेतु समिति में आती हूँऐसरा कहाँ करती थी।

उस समय की ओर एक घटना का स्मरण है। वं. मौसीजी के रामायण प्रवचनों का पुस्तक श्रीमंत सुमित्राराजे भोसले द्वारा लोकार्पित हुआ। श्रीमंत राजमाता को भी मंच पर विराजमान होने के लिये कहा गया। तब उन्होने कहाँ, 'यह तो हमारे मुजरे की सम्मान की गद्दी है। एक मंच पी विराजित नही होंगे' मंच क सामने सुमित्राराजे को मुजरा करते हुए, पीठ न दिखाते हुए वे पीछे आयी ओर सामनेवाली पंक्ति में कुर्सी पर विराजमान हुई।

महाराष्ट्र से बाहर प्रथम संमेलन

सन १९७१ में १० से १२ अक्टोबर को अगला संमेलन ग्वालियर में संपन्न हुआ। महाराष्ट्र के बाहर आयोजित यह प्रथम संमलन था। दस प्रांतोंसे ७०० सेविकाएँ उपस्तित थी। संमेलन में अष्टभुजा प्रतिमा की स्थापना श्रीमंत माधवीराजे तथा श्रीमंत माधवराव सिंधिया द्वारा की गयी। 'स्वतंत्रता का मूल्य' नामक प्रदर्शनी के आयोजन में सुप्रसिद्ध चित्रकार पद्मश्री मा. हरिभाऊ वाकणकरजी का सहयोग अनमोल रहा। उद्घाटन किया राजमाताजी ने। भारत की स्वतंत्रताप्राप्ति तथा उसकी सुरक्षा में समर्पित महापुरूष तथा महिलाओंका योगदान उनके जीवनदर्शन के साथ बडे कलात्मक ढंगसे प्रस्तुत किया गया था।'मुनी सांगे नृपनाथा 'इस महाभारत पर आधारित मराठी पुस्तक का विमोचन हुआ। १९६५ में देवी अहल्या मंदिर की प्रतिष्ठापना के पश्चात वहाँ निरंतर चहलपहल होते रहने की दृष्टी से कुछ कार्यक्रम आवश्यक थे। उस समय महाभारत और अपने पुराणग्रंथों के बारें मेंविपरीत प्रचार हो रहा था। मूल कथा सभी को मालूम हो इस दृष्टी से वं. मौसीजी ने प्रा. सिंधुताई नावलेकर को महाभारतकथा बताने का दायित्व दिया उसके संकलन का नाम ही 'मुनि सांगे नृपनाथा' । महारानी लक्ष्मीबाई की समाधि को सघोष मानवंदना दी गयी। मन में आया कि अगर शिंदे साथ देते तो स्वतंत्रता युद्ध का अंत अलग होता। परंतु आपसी स्पर्धा, वैमनस्य, यहीं अभिाप है अपने देश को। पथ संचलन में प्रथम बार ध्वज हाथी पर विराजमान था।

स्वतंत्रता का मूल्य यह प्रदर्शनी थी जिसका उद्घाटन राजमाता विजयाराजे शिंदे ने किया। मा. सिंधुताई ने सकिति का प्रचार कार्य इस विषय पर संबोधित किया।

दिनांक १२ को फलबाग मेदान पर संपन्न सार्वजनिक कार्यक्रम के अध्यक्ष कोल्हापूर के श्रेष्ठ आध्यात्मिक व्यक्ति श्री. दत्ता बाल ने कहाँ कि 'स्त्री को मायाविनी या देवी मानना मान्य नहीं। वह तो प्रेरणागुंज है। मार्क्सवाद के समाजवाद के आलोचक होते हुए भीहेगेल का तत्व 'प्रेरणा से प्रेरणा का निर्माण'मान्य है। स्त्री के माध्यम से ही भगवान का प्रकटीकरण होता है।धन ऋण

शक्तियों जैसी ही शिव और शक्ति,स्त्री और पुरूष ये शक्तियाँ है। शासन सुख-समृद्धी दे सकता हैपरंतु मन की स्वतंत्रता नहीं। स्त्री का आंतरिक उत्थान होना आवश्यक है। प्रकाश के परावर्तन जैसे सद्विचारोंका भी परावर्तन होता है। आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात स्त्री ने ही करना है।' जयश्री केळकर द्वारा लिखित गीत 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से वातावरण गुंज उठा।

सोलापूर की, जैन श्राविकाश्रम की अध्यक्षा पद्मश्री सुमतिबेन शहा की उपस्थिती उल्लेखनीय थी। हस्तलिखित कथासंग्रह का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा कि 'गृहिणी प्रसन्न तो घर प्रसन्नगृहमाता के मन का प्रतिबिंब घर में दिखाई देता है। जागृत नारीशक्ति ही देश का विकास कर सकती है'। स्थान स्थान पर हस्तलिखित अंक निकालने की यह परंपरा आज भी जीवित है।

वं. मौसीजी ने अपने उद्बोधन में कहाँ,'अनाज के अकाल से मानव मरता है, परंतु संस्कारोंके अकाल से मानवता मरतीहै। अत: सदाचार, सद्विचार का अकाल हमें दूर करना है। संकल्पपूर्वक हमें श्रेष्ठ संस्कारांको प्रदान करना है।'

'पानीपत की उत्तरक्रिया' यह स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी द्वारा लिखित नाटक सेविकाओंने बहुत सुंदर ढंगसे प्रस्तुत किया।

राष्ट्रोय राजधानी दिल्ली का संमेलन

सन १९७४ का संमेलन दिल्ली में आयोजित किया गया। हिंदवी साम्राज्य निर्मिती का सपना अपने पुत्र द्वारा अपने जीवनकाल में ही साकार करनेवाली जिजामाता के निर्वाण को ३०० वर्ष पूर्ण होने के कारण संमेलन राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में करनेंमें विशेषता थी। इस संमेलन का उद्घाटन बडोदा के गीता मंदिर की प्रमुक आदरणीय गीताबेन शाह की उपस्थिती में हुआ। धर्म के संबंध में उचित भावना संगठित प्रयत्नोंसे निर्माण हो रही है इस विषय पर उन्होंने आनंद व्यक्त किया। भ्रष्टाचार नष्ट करने के लिये हमें नैतिक बल का शस्त्र धारण करना पडेगा। समिति स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने केलिये कटिबद्ध है इस पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। सुप्रसिद्ध इतिहासतज्ज्ञ श्री. पु. ना. ओक ने ताजमहाल की पार्श्वभूमि का विवरण किया। यह कलावास्तु मुस्लिमोंद्वारा निर्मित नही है। वह हमारा शिवमंदिर है। हमारा स्वाभिमान नष्ट हो इसलिये वे कलावस्तुए हमारी नही है ऐसा अपप्रचार किया जा रहा है ऐसा मार्मिक विवेचन उन्होंने अपने भाषण में किया। '्मनोरंजन के आधुनिक साधन राष्ट्र को विनाश की ओर ले जा रहे है। ' इस विषय पर वादविवाद तथा 'राष्ट्र के उत्थान कार्य में हमारा सहयोग'इस विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया था। इस संमेलन का सार्वजनिक समापन, गोंदिया की आदरणीय माँ योगशक्ति की उपस्थिती में संपन्न हुआ। हरेक क्षेत्र में भारत फिर से उन्नत हो इसलिये प्रत्येक स्त्रीपुरूष ने अपनी सुप्त आत्मशक्ति को जागृत करने की आवश्यकता पर उन्होन बल दिया। आत्मविस्मृती से आत्मजागृती की ओर समितिकार्य अग्रेसर है इस विषय पर उन्होंने समाधान व्यक्त किया।

दिल्ली संमेलन में श्रीमंत मृणालिनी राजे होळकर श्रीमती गीताबेन शहा, माँ योगशक्ति, प्रेमलाबाई चव्हाण ये विविध क्षेत्र की श्रेष्ठ बहनें एक मंच पर आयी। प.पू. बालासाहब देवरस संघचालक पद का दायित्व स्वीकारने के बाद प्रथम बार इस कार्यक्रम में आये थे। उन्होंने समितिकार्य की आवश्यकता तथा उसको अधिक गतिमान बनाने का विचार प्रस्तुत किया। इस संमेलन में गीत था 'धर्म जहाँ है विजय वहाँ हैसंदेश देशभर गायें। 'बहुत ही प्रभावी रहा।

भाग्यनगर-वं.मौसीजी का अंतिम उद्बोधन

सन १९७८ का संमेलन भाग्यनगर (हैदराबाद) में माताथाडी हणमंतराव कन्या शाळा में संपन्न हुआ। यह दक्षिण भारत का प्रथम संमेलन था। संमेलन के दो माह पूर्व आंध्र के मछलीपट्टण क्षेत्र में प्रचंड तूफान के कारण जीवित एवं वित्तहानि हुइ थी। इस पृष्ठभूमि पर रू. ५०००/- की राशि एवं अनेक आवश्यक वस्तुएँ वहाँ मदद के रूप में प्रत्यी मिलकर दी गयी और संमेलन सादगी से संपन्न किया गया।

किसी कारण विद्यालय विलंब से मिला।वह निवासयोग्य बनाने हेतु प्रबंधोंकी संख्या बढानी पडी। स्वाभाविक ही इकठ्ठा किया हुआभोजन कम पडा। शारदाताई के घर संदेशा भेजते रहे। रोटियाँ चाहिये, और रोटियाँ चाहियें! हम सोच रहे थे कि,रोटियाँ बहुत ही मुलायम है। कौन बनाता होगा? रात में पता चला कि वं.मौसीजी और वं. ताईजीनेही रोटियाँ बनाकर भेजी! यह मालूम होने पर हमें बहोत संकोच लगा। हमारी ज्येष्ठ अधिकारियों की ममता देखकर हम दंग रह गये।

उत्तरप्रदेश की तत्कालीन सह शिक्षामंत्री श्रीमती मालतीजी शरमाद्वारा संमेलन का उद्घाटन किया गया। सौ. नारायणम्मा, श्री. पुल्ला रेड्डी ने देवी अष्टभुजा की स्थापना की।उस्मानिया विद्यापीठ के हिंदी विभाग प्रमुख श्री. राम निरंजन पांडेजी ने वं. मौसीजी के 'रामायण प्रवचन' (हिंदी संस्करण)का विमोचन किया।प.पू. बालासाहब देवरस की प्रेरक उपस्थिती थी। उनके साथ

प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम संपन्न हुआ। मा. सीतालक्ष्मी जी ने कहाँ की कई बार संघ के स्वयंसेवक भी अपने घर की महिलाओंको समिति में आने से रोकते है। बालासाहब ने पुछा कौन है वह अउसे संघ से निकाल देंगे। सीतालक्ष्मी जी ने तुरन्त उत्तर दिया कि उससे पहले वह अपनी पत्नी को घर से निकाल देगा। वह कहॉ जायें?

छत्रपती शिवाजी तथा स्वामी विवेकानंद जीवन दर्शन प्रदर्शनी यह आर्केण का बिंदू रहा। बालसाध्वी उमाभारती प्रथम बार प्रकट रूपमें उपस्थित थी। तब से सीमितकार्य में आस्था रखती है। रानी लक्ष्मीबाई भजन मंडल नागपुर द्वारा पाऊलभजन का कार्यक्रम सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया।

वं. मौसीजी ने अपने उद्‌बोधन में कहाँ कि,'स्त्री में सप्त शक्तियाँ सुप्त रूप से समाहित है' भक्ति, मुक्ति, शक्ति तथा नीती ये सारे शब्द यद्यपि स्त्रीलिंगी है। तथापि वे शब्द पुरूषार्थ निर्माण करते है। स्त्री की श्रद्धा, तितिक्षा, संस्कृति का अभिमान, अन्याय के प्रति चीढ और सुप्त आत्मशक्ति इन गुणोंका विकास एवं स्वीकार ही अगणित राम निर्माण करने में वर्णित ये ही शक्तियाँ है, यह भी ध्यान में रखकर उन्हे समाजहित के लिये धारण करना है।' वं. मैसीजी का यह अंतिम प्रकट उद्‌बोधन सिद्ध हुआ। इसी कार्यक्रम में अचानक उनका स्वास्थ्य बिगड गया। परंतु कार्यक्रम प्रभावी रहा।

प्रकट समापन समारोह केशव मेमोरियल के मैदान पर राज्यपाल महोदय की पत्नी श्रीमती शारदा मुखर्जी तथा सुप्रसिद्ध साहित्यिका इ. सरस्वती के उपस्थिती में संपन्न हुआ। विविध शारीरिक कार्यक्रम तथा उत्साहपूर्ण, अनुशासनपूर्ण,सघोष पथसंचलन यह संमेलन का आकर्षण था। राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने कहाँ, कि वं. मौसीजी ने अपने प्रवचनों में राम यह मानव था यह बिंदु प्रस्तुत किया। हम भी राम जैसे बन सकते है यह प्रेरणा उससे मिलती है। उनके रामायण कथन में रामायण के व्यावहारिक तथा राष्ट्रीय दृष्टीकोन का दर्शन होता है। राजनीति तथा अन्य क्षेत्रोंमें जो अशुद्धता है उसे नष्ट करने के लिये राष्ट्र सेविका समिति इस सांस्कृतिक संघटन की अत्यंत आवश्यकता है। इसे प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहाँ कि चारित्र्यवान व्यक्ति का निर्माण संस्कारोंसे ही होता है।

दक्षिण भारत का दूसरा संमेलन-बंगलोर

भाग्यनगर के यशस्वी संमेलन दिनांक २६, २७, २८ डिसेंबर १९८० को बंगलोर में लेने का निश्चय ज्येठ लोगोंकी सलाह से किया। उद्घायन समारोह में आशीर्वाद प्रदान करने हेतु पेजावर मठाधीश, श्री.श्रद्धेय विश्वेशतीर्थ महाराज उपस्थित रहे। अपने आशिर्वचन में स्वामीजी ने कहाँ कि, देवोंकी शक्ति से ऊपर के स्थान पर माँ दुर्गा की शक्ति है। जब पुरूष शक्ति सीमित होती है तब स्त्री शक्ति का साक्षात्कार हमें होता है। आज स्त्री शक्ति दुराचार निवारण हेतु संगठित कार्य कर रही है। यह परम भाग्य है। संमेलन में प्रथम बार स्मारिका प्रकाशित हुई दीप्ती। तब से हर संमेलन में स्मारिका प्रकाशित करने का क्रम बना हुआ है। बृहत्तर भारत इस विषय पर तथ्यपूर्ण प्रदर्शनी लगायी थी जिसमें पद्मश्री हरिभाऊ वाकणकर का अनमोल सहाय्य मिला।

संमेलन में प. पू. बालासाहब देवरस की उपस्थिती उल्लेखनीय थी। भव्य पथसंचलन के आयोजन का बालासाहब ने सराहा। उन्होंने कहाँ कि हिंदु संगटन संकुचित एवम् सांप्रदायिक नही है। हमारा धर्म एवं संस्कृति सर्व समावेशक है। हिंदु लोग सारे विश्व में ज्ञानप्रसार हेतु रखे गये थे। उनमें ना युद्ध की लालच थी, ना साम्राज्य स्थापना की। समितिकार्य का जो वर्तमान रूप दीख रहा है, ऐसा होगा ऐसा कुछ पहले कहते तो उसको ळीहर्षीश्रश्र ींहळपज्ञळपस कहा गया होता। परंतु बहुत परिश्रमपूवक निरंतर प्रयत्न करनेसे अनंत कठिनाइयोंको पार करते हुए आगे बढने से वह संभव हुआ है।

मसुराश्रम के संचालक पू. ब्रह्मचारी विश्वनाथ महाराज ने संमेलन को संबोधित किया। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'यह हमारी मूल संस्कृति है और वह पुरे विश्व में फल चुकी है। उसे संरक्षित रखनें हेतु हमें सजग रहना है। हमपर आघात हुए तो हम उसका सक्षमता से सामना कर सके ऐसी शक्ति हमें जुटांनी है। हमारा शक्तिप्रदर्शन ना कि हिंसात्मक हेतु से हो या सत्तालालसा से हो, किंतु हमारा दृष्टिकोण हम दुनिया के सामने प्रेम और शांति से रख सकते है। उन्होंने कहाँ कि धर्म परिवर्तन के लिए मिशनरियों की गतिविधियों का हमें डटकर सामना करना है। मा. भाऊराव देवरस भी संमेलन में उद्‌बोधन हेतु उपस्थित थे। उन्होंने सेविकाओंके सामने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहाँ कि जो भारतीय लोग विदेश में गये है वे बुद्धिवान है। किंतु विदेश में हमारे प्रति यह भावना है कि हम भारतीय गरीब भ्रष्टाचारी है। विदेश में रहनेवाले हमारे बंधुभगिनी इस भावना को दूर करनें में प्रयत्नशील रहने

चाहिये। उन्होनें अपने बुद्धि का उपयोग हिंदुस्थान के उत्थान हेतु समर्पित करना चाहिये। भारत का उज्जवल भविष्य किसी ज्योतिष्य हाथ में नही है अपितु यह भविष्य हमारे कर्तृत्व एवं समर्पण भावनायुक्त संगठन में है।

सार्वजनिक कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती गीताबेन शहा ने कहा कि जनसंख्यावृद्धि के साथ अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ बढ रही है। धर्म का अर्थ विकृत रूप से प्रस्तुत हो रहा है। ज्ञान एव समृद्धि के साथ सदाचार भी आवश्यक है। विदेशोंसें आयात सौंदर्यप्रसाधनोंका उपयोग करनेवाली बहने तस्करों को ही एक प्रकार से उत्तेजना दे रही है। स्वराज्य सुराज्य बनाने का ही स्त्र का ध्येय होना चाहिये।

बृहत्तर भारत

वं. ताईजी ने सेविकाओं को आशीर्वचन देते हुए कहा कि समिति की सेविका कैसी हो इसका स्पष्ट विचार एवं संकल्पना हमारे सामने रहनी चाहिये। परस्पर विश्वास यहीं हमारे कार्य की नीव है। राष्ट्र का वैभव बढाने हेतु हमें और सक्रिय होना चाहिये। संपूर्ण देश मेरा घर है यह मान कर उसकी रक्षा तन मन धन से करना है। उस कार्य में हमें सजगता दिखानी आवश्यक है। देश के बारे में अपने कर्तव्य का स्मरण रखते हुए समाजिक दुष्प्रवृत्तियोंको नष्ट करने के लिये प्रत्येक सेविका को सामने आना है। सेविका हरपल सेविका ही है यह बात उसे अपने मन में निश्चित करनी है। अगली पीढी में राष्ट्र भावना दृढ करने का संस्कारोंका संक्रमण हमारा आद्य कर्तव्य एवं प्रथम दायित्व है। वं. ताई जी ने प्रमुख संचालिका की जिम्मेदारी का स्वीकार करने के पश्चात यह प्रथम संमेलन था। किसी कारण प्रशासन हमें पथसंचलन के लिये अनुमति नही दे रहा था। वं. ताईजीने कहाँ कि चिंता मत करा। भगवान हमारी परीक्षा ले रहा है। हमें अनुमति निश्चितही मिलेगी। और रात १० बजे के बाद श्री नरहरी जी ने आकर बताया कि सुबह के पथसंचलन को अनुमति मिली है।

इस संमेलन में राष्ट्र समस्याएँ इस विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया था। परिसंवाद की अध्यक्षता नागपुर को विद्याताई पंडे ने कि। समिति की सेविकाओंका इस परिसंवाद में सहभाग था। भ्रष्टाचार एवं महिलाओं पर अत्याचार यह विषय बडी ही प्रकर्षता के साथ चर्चित हुआ। हमारे देश की निरक्षरता भी हमारे लिये बहुत बडी समस्या है। इन समस्याओंपर हमारे पास उपाय होना चाहिये। समस्याओं पर विजय पाने हेतु हमें सतत संगठित प्रयत्न करने है।

असम की बहनों ने वहां की परिस्थितीयों पर प्रभावी ढंग से मूकनाट्य प्रस्तुत किया। संमेलन की सभी व्यवस्थाओं में चुस्ती थी। समृद्ध सुदूर दक्षिण क्षेत्र में जहाँ मुख्य भोजन चावल होता है वहाँ उत्तर भारत की बहानों के लिये रोटियाँ बनाना बडा काम था। सामान्यत: रोटियाँ बनाना और सेकना एक साथ ही होता है। परंतु यहॉ कि बहनोंने पूरी रोटियाँ बेलकर एक थप्पी में जमायी और बाद में एक एक करके सैंकी। बनानेवालों की एक प्रकार से परीक्षा थी।कहते है नं 'भिन्नरूचिर्हि लोका:'दक्षिण में हर चीज में कच्चे नारियल का मुक्त उपयोग तो उत्तर की बहनों को वह पसंद नही आने के कारण नारियल अलग निकालने का प्रयास करती थी। परंतु किसीसे कोई शिकायत नहीं कीं। स्नेह की अनुभूति ने यह सब गौण बनाया। परंतु अपनी बहनों का अच्छा भोजन मिलें इसलिये उन्होंने अपार कष्ट किये। ऐसा ही अनुभव सभी स्थानों पर आया है।

समृद्ध गुजरात में समृद्ध अनुभव

१९८३ का संमेलन पश्चिम दिशा के गुजरात प्रांत की राजधानी कर्णावती (अहमदाबाद) में संपन्न हुआ। सांस्कृतिक औरभौतिक समृद्धि से ओतप्रोत ऐसा यह महानगर। निवासस्थान वगैरे सब निश्चित हुआ। कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रसिद्ध हुई तब उस स्थान के प्रमुक ने बुलाकर हमें कहाँ,'संघ के सरसंघचालक आनेवाले है आपके कार्यक्रम में। ऐसे सांप्रदायिक संघटन के कार्यक्रम के लिये हम स्थान देंगे।'यह मानो एक वज्रपात ही था। सभी को यह बात चुभी थी। इतने कम समय में स्थान प्राप्त करना, उस दृष्टि से नये सिरे से सारी व्यवस्थाएँ बनाना एक आव्हान था। परंतु अपना कार्य ईश्वरीय है इसकी अनुभूति आयी। उस समय विभा प्रचारक थे श्री.नरेंद्रभाई मोदी। दिनरात एक करके स्थान खोजा काशीरामभवन; जिसका रचनाकार्य अंतिम चरण में था। वह स्थान लेकर सारी व्यवस्थाएँ खडी की। परंतु हमें अपेक्षित सुव्यवस्था नही हो पायी। फिर भी कार्यक्रम बहुत अच्छी तरह से संपन्न हुए।

कार्यक्रम में रानी माँ गाईदिन्ल्यू भी पधारनेवाली थी। संपूर्ण शासकीय सुरक्षा व्यवस्था सजग हो गयी थी। परंतु केंद्रसरकार के निर्बंध के कारण उन्होंने उपस्थित रहने में अपनी असमर्थता जतायी। ऐन समय पर श्रद्धेय इंदिरा बेटी जी भी अपने भाभी के

अस्वास्थ्य के कारण नही आयेगी ऐसी सूचना मिली। संजोग से श्रीमंत राजमाता विजयाराजे शिंदे उस समय कर्णावती में थी। संमेलन की जानकारी प्राप्त होने पर उन्होंने संपर्क किया। अन्य लोग उन्हें कह रहे थे कि, आपको तो निमंत्रण नही है। आप क्यों परेशान होती है? उनका उत्तर था कि मेरा निमंत्रणपत्र निश्चित ही ग्वालियर में पहुंचा होगा। और एक सेविका को कार्यक्रम का पता चलने पर उसका कर्तव्य बनता हैवहाँ उपस्थित रहना! फिर भी उन्होंने फोन करके पता पुछा।उन्हें स्थान का पता बता कर कहाँ कि उद्घाटन आधे घंटे बाद है। आप आईये।तब तक इंदिराजी का संदेश नहीं मिला था। राजमाताजी संमेलनस्थान पर पहुंची तब उनको बताया गया कि कार्यक्रम का उद्घाटन उनको ही करना है।समय हो रहा है। पानी वगरे पीये बिना ही संगठन का आदेश शिरोधार्य है ऐसा कहकर मंच पर आयी। कार्यक्रम निश्चित समय पर और इतना व्यवस्थित हुआ कि बीच में इतन पानी बह गया है यह किसी को पता ही नही चला। जिनको मालूम था कि इंदिरा बेटी जी आनेवाली है उनको मंचपर विजयाराजे को देखकर बडा आश्चर्य लगा। ऐन समय पर उद्घाटन हेतु ऐसी श्रेष्ठ व्यक्ति का मिलना यह सचमुच ही भगवान की कृपा ही थी।

स्मारिका 'निर्माण'का लोकार्पण सुप्रसिद्ध उद्योजिका मा. देविकाबेन जी पटेल ने किया। 'ज्योति मंदिर में जलेगी' इस गीत केस्वर वातावरण में स्पंदित हुए। मा. सुदर्शनजी का अनेकता में एकता, दुर्बलोंका संरक्षण, जिओ और जिने दो, कमाएगावह खिलाएगा आदि बिंदुओंपर प्रभावी बौद्धिक, वनवासी क्षेत्र की बहनों की लक्षणीय उपस्थिती और गुजरात के सर्वादरणीय संत श्री मुरारीबापू का सार्वजनिक कार्यक्रममें मार्गदर्शन आदि विशेषताओंसे स्मरणीय ऐसा यह संमेलन रहा। मा. मुरारिबापू ने सीता के पवित्र जीवन के पहलू बडी रोचकता से रखे। इस संमेलन में मातृशक्ति की झलकियाँ यह प्रदर्शनी लगायी थी।देवी अष्टभुजा की प्रतिमा सभी के आकर्षण का केंद्र रही।

संमेलन में 'मंगला नारायणी मां सप्तशक्तिधारिणी' और 'संगठित हो नारीशक्ति देश अब आधार माँगे।' ये दो गीत प्रभावित करते रहे।

नागपुरसंमेलन स्वर्ण जयंती समारोह

संमेलन में विविध प्रकार के अनुभवोंके बाद हमारा उत्साह बढ रहा था। अगला संमेलन ६ से ८ नवंबर १९८६ को नागपुर में उत्साहपूर्ण रीती से संपन्न हुआ। समिति की आराध्य देवी अष्टभुजा की प्रतिमा की विधिवत् प्रतिष्ठापना हुई। इसी संमेलन में प्रथम बार व्हिडिओ रेकॉर्डिंग किया गया। समय के साथ कदम रखनें है नं!

यह वर्ष समिति की स्थापना का सुवर्णजयंती वर्ष था। कुल ३,९०० सेविकाएँ इस संमेलन में संमिलित हुई। देवी अष्टभुजा और श्रीराम का थर्माकोल का सुंदर मंदिर बनाया था। पीछे परदे पर मनु का बीज प्रलयकाल में बचानेवाली मछली अर्थात राष्ट्रभावबीज सुरक्षित रखनेवाली स्त्री का चित्र था। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यिक और पुणे शाखा की प्रथम गण सेविका श्रीमती मृणालिनी देसाई ने की। अपने उद्घाटन भाषणमें उन्होंने कहा कि इस ध्वज के सम्मुख वं. ताई जी की उपस्थिति में मैं पुणे में सेविका बनी। अपनी प्रतिभा को राष्ट्रकार्य में समर्पित करने का मैने निश्चय किया। स्त्रीशक्ति में समाज का प्रवाह योग्य मार्ग लाने की शक्ति है। आज हम दृढ संकल्प करें कि हम समाज में उत्पन्न दोष सक्षमता से दूर करेंगे। वं. मौसीजी ने हमारा धैर्य एवं आत्मविश्वास बढाया है। उन्होंने कहाँ कि स्त्रीशक्ति से पूरा राष्ट्र जागृत होता है। स्त्री को अपनी क्षमताए पहचानना चाहिये।

प. पू. बालासाहब देवरस अपने विचार सेविकाओंके सामने प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि आज हिंदु समाज संकटग्रस्त है। हमारे दोष दूर कर हमें जागृत होना है। इस कार्य का प्रारंभ स्त्री अपने कुटुंब से कर सकती है। उसने करना भी चाहिये। स्त्री की भूमिका दायित्वपूर्ण होती है। हमारे समाज का निर्माण स्त्री से होता है। बलवान पुरूष की जाया एवं जननी स्त्री है यह हमें भूलना नहीं है। हमारे कार्य के लिये हमें क्षेत्र की मर्यादा है यह विचार मन से निकाल देना चाहिये। स्त्री के कार्य एवं जागृति के लिये हर क्षेत्र में आज अवसर है। स्त्री यदि सार्वजनिक क्षेत्र में जागृत होती हैतो हमारे समाज में उभरे हुए दोष दूर हो सकते है। हमारा कार्य बिकट है किंतु हमें हिंमत नहीं हारनी है। स्त्री की भूमिका प्रेरणास्त्रोत की है। यह स्त्रोत कभी भी कम नही हो इसलिये हमें जागरूक रहना है।स्त्री की बहुविध भूमिका का बखान करते हुए सजग मातृत्व समाज को बल प्रदान करेगा ऐसा कहा। सामाजिक समरसता का बिंदू प्रस्तुत करते हुए आंतरजातीय विवाह को उत्तेजन देना चाहिये ऐसा कहाँ । इसका एक विचित्र अनुभव बाद में आया। काँग्रेस का एक जनजातीय नेता अहल्या मंदिर में आकर परेशान करने लगा कि बालासाहब ने कहा है तो लडकियोंके नाम

दीजिये। हम इतने तंग हो गये कि उनको बताना पडा कि बालासाहब जी ने जो कहा उसकी भुमिका उनसे पुछे। हमारी भूमिका है कि हम ऐसी घटनाएँ होती है तो उसको समर्थन देंगे।

वं. ताईजी ने इस संमेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहाँ कि सामाजिक कार्य की दृष्टी से ४९ वर्ष यह बाल्यकाल ही है। संगठन चिरंजोवी हो इसलिये हमें स्वयंप्रेरणा से तथा समर्पित भाव से कार्य करना है। सेविका बनना आसान है। परंतु वह व्रत निभाना आसान नही है। हम प्रामाणिक प्रयत्न करेंगे तो जगज्जननी हमें निश्चितही आशीर्वाद देगी।

दीपज्योति नमोऽस्तुते

दीपस्तंभ स्मारिका, मा. सुशीलाताई महाजन द्वारा लिखित वं. मौसीजी की जीवनी 'दीपज्योति नमोऽस्तु ते','भारतीय संस्कृति के प्रतीके'और श्रीमती अनुताई भागवत (कुष्ठधाम के श्री शिवाजीराव पटवर्धन की कन्या) द्वारा लिखित 'भारतीय स्त्री परंपरा का अभ्यास' इन पुस्तकोंका विमोचन श्रीमती योगिनी जोगळेकर ने किया। इस संमेलन में आयोजित परिसंवाद का विषय था हमारी शिक्षण पद्धति। अन्यान्य मान्यवरोंने अपने विचार सेविकाओंके सामने प्रस्तुत किये। अध्यक्षा अरूणाजी डालमियां ने कहां, 'स्त्री को अपना आत्मभान जगाना है। हमारा धर्म स्त्रीत्व,शील सुरक्षा के लिये है। हमें यह बात ध्यान में रखनी है कि ज्योति से ज्योति प्रकाशित होती है। वं. मौसीजी द्वारा प्रदीप्त किया हुआ दीप समस्त नारीजीवन को प्रकाशित कर रहा है।'

इस संमेलन का समापन राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने किया। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते कहा कि समिति कार्य मानो वालुकामय प्रदेा में हरियाली है। मेरी राष्ट्रभक्ति की ज्योति अधिक प्रखर हो इसलिये मै संमेलन में संमिलित होती हूँ। यहां ऊर्जा प्राप्त कर उत्साह भरे मन से मैं काम में जूट जाती हूँ। हमें अंत:मुख होकर अपने कार्य में जूट जाना है। हमें अपने साध्य का स्मरण रखना है। परिवार एवं समाज राष्ट्रकार्य का दीप प्रज्वलित हुआ तो अंधकार दूर होगा। इस संमेलन में ४००० सेविकाओं की भव्य शोभायात्रा तथा पथ संचलन का आयोजन किया गया था। अलग अलग स्थानोंसे प्रारंभ होकर दोनों का संगम श्री शक्तीपीठ में हुआ। दिनांक सात को सायं पाच बजे सरस्वती मंदिर से शोभायात्रा प्रारंभ हुई। सामान्यत: नेत्रागण जीप वगैरा में आरूढ होते है। परंतु इस शोभायात्रा में प्रमुख संचालिका वं. ताई आपटे, राजमाता विजयाराजे शिंदे सुप्रसिद्ध उद्योजिका अरूणा डालमियां, नागपूर की श्रीमंत शालिनी राजे भोसले, शोभायात्रा का पूरा मार्ग पैदल चलकर आयी। लक्ष्मीभवन चौंराहें पर प.पू. बालासाहब ने उनके सुरक्षा घेरे से बाहर आकर मुक्त मन से, प्रसन्न मुद्रा से शोभायात्रा, पथसंचलन देखा।

वं. मौसीजी के जीवन पर आधारित स्मृतिगंध चित्र प्रदर्शनी तथा अन्य विविध विषयों पर प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी।

१) धर्मांतर एक राष्ट्रीय संकट

२)कित्तुर की रानी चेन्नमा-जीवन प्रदर्शनी

३) स्त्री जीवन की दशां एवं दिशा.

४) क्रांतिकारकोंके जीवन पर आधारित 'अग्निफले'

इन प्रदर्शनियोंका यशस्वी आयोजन किया गया था। श्री शक्तीपीठ में प्राच्य विद्या कक्ष का भी उद्घाटन हुआ।

वं. मौसीजी ने १९५३ के संमेलन में योगाभ्यास तथा स्त्रीशिक्षा पर परिचर्चा का आयोजन करके तज्ञोंको निमंत्रित किया था। तीन दशकोंके पश्चात इसकी पुनरीक्षा करने हेतु १) योगप्रणाली,कैवल्यधाम,लोणावळा, २) अय्यंगार योगसंस्था, पुणे.३) योगविद्याधाम,नाशिक, और ४) विवेकानंद केंद्र के प्रमुखों को आमंत्रित किया था। शिक्षा क्षेत्र के लिये मा. दीनानाथ जी बत्रा, श्रीमती संतोष शैलजा आदि को निमंत्रित किया था। स्वास्थ्य, शिक्षा,संस्कार ये महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषय है। उसके लिये राष्ट्रीय नीति निर्माण होना आवश्यक है। मा. कुसुमताई साठे का भारत सांस्कृतिक, राजनीतिक सीमाएँ -कल, आज कल कल इस विषय पर बौद्धिक हुआ। उनके पति श्री अननन्तराव की मृत्यू को केवल १५ दिन हुए थे। परंतु प्रखर कर्तव्य भावना ने व्यक्तिगत आघात पीछे छोड दिया।

नागपुर संमेलन में भी परमेश्वर ने एक बार कसकर परीक्षा ली। दिनांक ६ को संमेलन का उद्घाटन था। सभी व्यवस्थाएँ आखरी बिंदू तक पहुंच रही थी। कार्यक्रम मंडप सज रहा था। और दिनांक ४ की उत्तररात्रि को तुफानी वर्षा में हुई। मंडप, रसोईघर, स्नानघर उद्ध्वस्त हो गये। बिजली का कडकडाट, तीव्र हवा के झोके और बिजली गुल होना। एक से एक संकट। हतबल होकर देख रहे थे। उधर संघकार्यालय में प.पू. बालासाहब देवरस श्री आबाजी को जगाकर बार बार पुछ रहे थे, 'आबा जाकर देखो

ना,वहाँ ये बहने क्या कर रही होगी?' ना वे स्वयं सोये ना आबाजी को सोने दिया। भोर सुबह बारिश कम होते ही आबाजी आयें देखा वह दृश्य। कीचड भर गया था। मंडप, चुल्हे उकड गये थे। कल का उद्घाटन का कार्यक्रम यहाँ होना संभव नहीं था। सभी ने यह अपना ही दायित्व है यह मानकर कीचड उठाना, पत्थर का चुरा लाना यह आदि की योजना बनाई। सब बंधू बहने जूट गये। बाल सेविकाओंनेभी श्रृंखला बनाकर कीचड उठाना और पत्थरचुरा लाना यह कार्य अपनी शक्ति से बाहर कष्ट उठाकर किया। कठिन प्रसंगो में यह परिवार भावना और दायित्व बोध का मनोरम दर्शन मन को छू लिया।

परंतु हर सुख दुख की झालर होती है। वानखेडे सभागृह में व्यवस्था जुटाकर दिनांक ६ को सुबह उद्घाटन कार्यक्रम की तैयारी पुरी हो रही थी। सभी बहनें सभागृह की ओर प्रस्थान कर रहीं थी। सभी का ध्यान उधर ही था। कार्यालय में गिने चुने लोग चित्रा जोशी, उषा मुळे, इंदुताई छत्रे,सविता काळे और लीलाताई देशपांडे ही थे। अचानक लीलाताई देशपांडे अस्वस्थ हुई। कुछ सेकंद में ही दर्द जादा बढ गया।सविता काळे ने डॉ. वैजयंती पांडे को बुलाया और तुरंत डॉ. कडबे के चिकित्सायल में दाखल किया। सभी परिवारजन आ गये। उनके पति और भतीजी डॉक्टर होने के कारण उन पर छोडा लीलाताई को। डॉक्टर कडबे ने तुरत उपचार किये। लीलाताई थोडी होश में आ गयी। तब पुछा, 'उद्घाटन हैन कार्यक्रम का मुझे यह क्या हुआ?' डॉक्टरने जादा न बोलने की सलाह दी थी। मन बेचैन था। शरीर यांत्रिकतापूर्वक कार्य कर रहा था। मन र बोज था ही। भगवान ने इस संकट से तारा। 'तारा है सारा जमाना', प्रभु हमको भी तारो ससके अलावा था ही क्या अपने हाथ में? धीरे धीरे लीलाताई धोखे से बाहर आयी। उनके जिम्मे संपूर्ण निवास व्यवस्था थी। अन्य बहानोंने समर्थता से इस अचानक आयी व्यवस्था को संभाल लिया। वं. मौसीजी का स्मरण हुआ। उनका हमेशा कहना रहता था कि वैकल्पिक व्यवस्था एवं योजना बनानी चाहिये। उसका महत्व ध्यान में आया।

पुनश्च दिल्ली

हमारा अ. भा. चतुर्दश संमेलन दिल्ली में २५,२६,२७ ऑक्टोबर १९९६ में निझामुद्दिन के स्पोर्टस् अँड गाईड कँपिंग परिसर में संपन्न हुआ। प्रमुख संचालिका के नाते वं. उषाताई जी की उपस्थिती में यह प्रथम संमेलन था। बाधाएँ और कठिनाईयाँ हमारी नियति है। दिल्ली में डेंग्यू बुखार का इतना प्रभाव था कि ाहर में प्रवेश पर पाबंदी लगाने की योजना बनी। इतनी सेविकाओंकी जाँच प्रतिबंधक दवाई उपलब्ध करना यह प्रचंड काम था। पर वह निभा लिया। फिर एक दुर्घटना हुई। संमेलन के प्रथम दिन ही असम की एक सेविका को मस्तिष्क रक्तस्त्राव के कारण दाखल करना पडा। स्वास्थ्यमंत्री हॉ. हर्षवर्धन और सभी ने प्रयत्नों की पराकाष्ठा की। परंतु हम उसको बचा नहीं पायें। उसके बेटे को हवाई जहाज से बुला लिया था। उन्होंने अपने रिश्तेदारोंको कहां,कि संगठन ने जितने प्रयत्न किये उतने हम कोई भी नहीं कर पाते। वह पुण्यात्मा थी इसलिये पुण्यभूमि पर उसका जीवनान्त हुआ। ऐसी दुर्घटना संमेलन में होने का असर होना स्वाभाविक था। परंतु ससका पता बहुत कम लोगोंको था।

संमेलन में सेविकाओंकी उपस्थिती उत्साहवर्धक थी। अब हमारा कार्य भारत की सीमाआं को लांघकरू विदेशोंमें पहुँचने लगा था। संमेलन की कुल उपस्थिती लगभग १०,००० थी। इतनी बडी संख्या होते हुए भी अनुशासन का दर्शन हो रहा था। प्रात:काल श्रीसूक्त,पुरूषसूक्त के पठण से पवित्र वातावरण में सुबहा १० बजे दिल्ली के माननीय मुख्य मंत्री श्री साहबसिंग वर्मा ने प्रदशनी का उद्घाटन किया। विषय था-वस्त्र,पात्र, चित्र, क्षेत्र। हमारी प्राचीन वस्त्रकला,चित्रकला,आदि में कैसा अध्यात्म और श्रेष्ठ संस्कार है यह प्रत्यक्ष वस्तु रखकर प्रदर्शनी बनायी थी। वह देखने हेतु रात के समय भी बहनोंकी भीड होती थी। हमारे दैनंदिन कार्यक्रम में हमारी संस्कृति का, विचारोंका प्रतिबिंब दिखता है। सिख बंधुओंने दस गुरूओंके कार्य भी उत्कृष्ट प्रदर्शनी लगायी थी।

विवेकानंद केंद्र प्रमुख मा. डॉ. लक्ष्मीकुमारजी द्वारा हमारी 'विश्वंभरा'स्मारिका का विमोचन हुआ। इस स्मारिका की संपादिका थी मा. शरद् रेणु (मथुरा) । उसके पश्चात उद्घाटन समारोह में जैन साध्वी डॉ. साधना भारतीजी ने सेविकाओं को संबांधित किया। उन्होंने उपस्थित मातृशक्ति को कर्तव्य पालन का आवाहन किया। अन्यान्य पद्धति से हमें हमारें संस्कारोंको अगली पीढी तक पहुंचाना है। इस विषय पर उन्होंने अपने उद्बोधनमें बल दिया। प्रमुख अतिथी के रूप में सरसंघचालक रज्जूभैय्या भी उपस्थित थे। उन्होंने अपने भाषण में मातृशक्ति का गौरव किया तथा हमें हमारी जिम्मेदारियोंका सजगता से पालन करने का आवाहन किया। हमें कभी भी निरूत्साही, नाराज होकर धैर्य नहीं खोना है। यह बात भी उन्होंने सेविकाओं के सामने रखी।

दोपहर के सत्र में मा. प्रमिलाताई मेढे ने 'हिंदुत्व- एक जीवन पद्धति' यह विषय बडे अभ्यासपूर्ण तरीके से तथा रोचकता से सेविकाओंके सामने रथा। हम सेविकाओं को उनकी जिम्मेदारियोंका पूर्ण एहसास होना चाहिये। हमारे घर से प्रारंभ करते हुए

हमारे संस्कारोंको प्रबलता से तथा आग्रहपूर्वक अगली पीढी के सामने रखना है। हिंदुत्व का संदेश भी हमें समाज के सभी वर्गों तक प्रभावपूर्ण ढंग से पहुंचाना है। हमारे संस्कार केवल पुस्तकोंमें तथा मन में विचार के रूप में न रहते हुए उन संस्कारों के हमारे दैनंदिन जीवन का अपरिहार्य भाग हमें बनाना है। अगले दिन 'सांस्कृतिक प्रदूषण' इस विषय पर पीरसंवाद आयोजित किया था। परिसंवाद में अन्यान्य वक्ताओंने अपने विचार प्रस्तुत किये थे। डॉ. संजीवनी केळकर ने अपने भाषण में प्रदूषण का कारण बताते हुए कहां कि,हमारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बिगड रहा है। हमारे शरीर के साथ साथ हमारे मन पर भी उपचारों की तथा उसे योग्य संस्कारोंका विचार दृढता से देने की नितांत आवश्यकता है। जब हमारा मन सुचारू रूप से संस्कारित होगा तभी हमारा शरीर भी सुदृढ रहेगा। इसलिये हमें प्रदूषण पर गंभीरता से विचार करने का समय आया है।

विद्याभारती की मान्यवर अधिकारी -शिशुवाटिका प्रमुख इंदुमती काटदरे ने प्रतिपादित किया कि शिक्षा का क्षेत्र भी इस प्रदूषण से नही बचा है। ढाई-तीन साल की आयु में हमारे बच्चे शालेय जीवन का प्रारंभ करते है। माता की ममता के साथ साथ अनुशासन का भी पालन उनके जीवनपद्धति में रोपित करना हमारा आद्य कर्तव्य है। शिक्षा प्रणालि में इस दिशा में कुछ बदलाव अत्यंत आवश्यक है। डॉ.रमा मिश्रा ने इस विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण हमारा बलस्थान -हमारा परिवार -दुर्बल होता जा रहा है। इस प्रदुषण के परिणाम हम सब भुगत रहे हैं।इस पर गंभीरता से विचारमंथन मी नितांत आवश्यकता है।

भोपाल के ओजस्विनी मासिक पत्रिका की संपादिका श्रीमती सुधा मलैय्या ने अपने विचारप्रस्तुत करते हुए कहा कि इस प्रदूषण से हमारा साहित्यजीवन भी बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। साहित्य हमारे जीवन का एक अविभाज्य अंग है। विविध संस्कार, विचार, दिशा हमें साहित्य से मिलती है। एक प्रभावी माध्यम होते हुए भी हमारे साहित्यिक जीवन की शोकांतिका हमें नजर आ रहीं है। अंत में परिसंवाद के अध्यक्ष पंजाब के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रमाा जॉईस ने कहां कि, सांस्कृतिक प्रदूषण जिस गति से जा रहा है उस गति का हमें संगठित रूप से सामना करना है। इसकी बडी जिम्मेदारी मातृशक्ति पर है।

डॉ. रजनी रॉय द्वारा अंग्रजी में अनुवादित Life sketch of Vandaniya डॉ. शकुंतला दवे द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति के मूलाधार' एवं मा. चित्राताई जोशी द्वारा संकलित 'कर्तृत्व,मातृत्व, नेतृत्व' तथा 'प्रेरिका' इन पुस्तकोंका विमोचन हुआ।

दिल्ली का विस्तार ध्यान में रखते हुए अलग अलग स्थानों सें चार पथसंचलन तथा शोभायात्रा के मार्ग में सेविकाओंको सराहा गया। स्वागत किया गया। एक महत्वपूर्ण तथा हमारें कार्य को समाज में जो स्थान है उसका प्रतिबिंब दिखानेवाली उत्साहपूर्ण तथा अभूतपूर्व घयना हुई। वं. उषाताईजी को और मा प्रमिलाताईजी को शीशगंज गुरूद्वारा की ओर से भावुकता से एक सरोपा प्रदान किया गया। महिलाएँ भी समाज के सभी घटकोंको मान्य है ऐसा प्रतीत होने लगा है।

समापन समारोह की अध्यक्षता प्रथम महिला मंडलेश्वर श्रद्धेय संतोषीमाता ने की। प्रमुख अतिथी के रूप में अ.भा. आयुर्विज्ञान संस्थान की डॉ. कमला बक्षी उपस्थित थी। उस में अनुशासनबद्ध योगासन, दंड, छुरिका,खड्ग का प्रात्यक्षिक दिखाया गया। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम में वं.मौसीजी के जीवन पर लघुपट दिखाया गया। कर्तृत्व का आदर्श देवी अहल्यादेवी का जीवनपट दर्शानेवाली नाटिका प्रस्तुत की गयी।

सायंकाल समापन कार्यक्रम आंबेडकर स्टेडियम में संपन्न हुआ। सभी पथसंचलन इसी स्थान पर एकत्रित हुए थे। पूरा स्टेहियम भगवा ध्वज से सुशोभित किया गया था और स्टेहियम का मैदान छा गया था शुभ्र वस्त्रधारी सेविकाओंके समूहोंने अ,क रंग त्याग का भगवा दूसरा शुभ्रथा पतिव्रता का। वं. उषाताईजी ने ग्रामों में कार्यवृद्धि की आवश्यकता पर बल दिया। शहरी एवं नागरी भागों के साथ साथ हमें हमारे ग्रामो तक हमारे विचार पहुंचाना है। इसलिये हमें हमारी शक्ति बढानी है तथा नियोजनबद्धता से स्वदेशी,भ्रष्टाचार का मुकाबला संस्कारों का महत्व इन विषयों को लेकर कार्यपथपर अग्रेसर होना है। उस कार्य को करते हुए हमें हमारा संगठनभी मजबूत करना है।उससे हमें सामर्थ्य प्राप्त करना है। राजधानी दिल्ली में संपन्न इस संमेलन मे ही तय किया गया कि अगला संमेलन वं. मौसीजी के जन्मशताब्दी के निमित्त नागपुर में ही आयोजित किया जायेगा। उसके अनुसार दिनांक ६,७,८ नोव्हेंबर २००५ का यह अखिल संमेलन अपनी विविधताओं और विशेताओंके साथ मातृधाम में संपन्न होने जा रहो है। शहरसे

बाहर तंबुओंका नगर निर्माण करके संमेलन संपन्न करने का यह प्रथम अवसर है। अनेक आव्हान है। परंतु आदिशक्ति के कृपाप्रसादसे अनको झेलने की शक्ति मातृधाम देगा यह विश्वास है।